आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:23-10-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को देही-अभिमानी बनने का और याद की यात्रा में रहने का सिखलाकर, तमोप्रधान से सतोप्रधन बनाने वाले, पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - याद की यात्रा पर पूरा अटेन्शन दो, इससे ही तुम सतोप्रधान बनेंगे.

बाबा की हर मुरली में बाबा हमें एक मुख्य ड़ायरेक्शन जरूर देते है - मीठे बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. इस का मूल कारण है हम आत्माओं ने लास्ट ६३ जन्म से देह-अभिमान में रहकर अपना पार्ट बजाया हैं. तो अभी देही-अभिमानी बनने में ही मुश्किलात होती हैं.

देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं. एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो का उपयोग कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फील करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये. जितनी हमारी देही-अभिमानी अवस्था बढ़ती जायेगी उतना हमारे आस-पास शान्ति का वायुमण्डल भी बनता जायेगा.

इस स्वमानो का उपयोग करने से हमारे व्यर्थ संकल्पों भी समाप्त हो जायेंगे.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ . शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड हूँ, अमर हूँ, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

अब हम अपनी देही-अवस्था में रहकर, बाबा की आज कि मुरली से निकाले गये कुछ महावाक्यों को मन में ही पढ़ेंगे (मुख से बोले बिना). इसे हमें आत्म-अभिमानी अवस्था में रहकर बाबा को याद करने की प्रैक्टिस होगी.

- बाबा, हम जो सतोप्रधान थे सो तमोप्रधान बने हैं, फिर आपकी ही श्रीमत् को अनुसरण कर वापस हमको सतोप्रधान जरूर बनना हैं.

- बाबा, आप तो हो ही कल्याणकारी. आप हम पर कितनी मेहर करते हो जो हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का ड़ायरेक्शन देते हो.

- बाबा, आप कितने निरहंकारी हो, अपने को हमारा मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट कहते हो. आप हमारे लिए कितनी मेहनत करते हो.

- बाबा, आप ही पतित-पावन भी हो. आपको याद करने से ही, यह योग अग्नि से ही हमारे जन्म-जन्मांतर के पाप भी भस्म होते हैं.

- बाबा, आप ही मुक्ति-जिवनमुकित दाता हो. बाबा, हमारे सब बन्धन खलास करो. हमें मुक्ति-जिवनमुक्ति प्रदान करो.

- मेरे मीठे-मीठे बाबा, आप कितने मीठे हो. हमें आपके जैसा मीठा बना दो.

- बाबा, हम आपकी डायरेक्शन अनुसार जरूर चलेंगे. हर कर्म करते बाप को अंदर ही अंदर याद करते रहेंगे. माया कितना भी माथा मारे पर हम तो श्रेष्ठ बाप को जरूर याद करेंगे.

- बाबा, आप ही गति-सद्गति दाता हो. आप ही हमें गति-सद्गति देते हो. हमने अब ८४ जन्मो का चक्र पुरा किया है. अब आपके साथ वापस घर जाना हैं. फिर सतयुग में आना हैं.

इस तरह से बाबा की खूब महिमा करते बाबा की याद में रहने से ही हम आत्माये तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगी.

ॐ शांति.